

## मध्य प्रदेश का आधुनिक इतिहास

मध्य प्रदेश का एक नया अध्याय मुगलों के उदय और भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के आगमन के साथ आरंभ हुआ।

### मुगलों और अंग्रेजों का उदय

- पेशवा बाजीराव ने उत्तरी भारत की ओर अपनी यात्रा शुरू की।
- विंध्य प्रदेश में, चंपत राय ने औरंगजेब की शोषणकारी नीतियों के खिलाफ जवाबी कार्यवाही की।
- अप्पा साहेब भोंसले फरवरी, 1817 में नागपुर के सिंहासन पर बैठे। उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ सहायक संधि पर हस्ताक्षर किए।
- बुंदेला राजा छत्रसाल ने सागर और दमोह जिले पुणे के पेशवा को दे दिए थे।
- लॉर्ड हेस्टिंग्स द्वारा पेशवाओं को अपदस्थ करने के बाद मंडेला, बेतूल, सिओनी और नर्मदा घाटी के 20 जिलों को 1817 में अंग्रेजी शासन से शामिल किया गया था।

### विद्रोह की भावनाओं का आविर्भाव

- वर्ष 1842 में, इन क्षेत्रों में ब्रिटिश अत्याचार के खिलाफ असंतोष था।
- इस असंतोष ने विद्रोह का रूप ले लिया और अलग-अलग नेतृत्व में विद्रोह शुरू हो गया।
- चंद्रपुर के जवाहर सिंह बुंदेला और नरहट के मधुकर साहा ने नेतृत्व किया।
- मदनपुर के गोंड राजा दिलशान शाह, हीरापुर के राजा हृदय शाह जैसे छोटे क्षेत्रों के कई अन्य राजा उनके साथ शामिल हुए।

### अंग्रेजों द्वारा महत्वपूर्ण स्थानों का संयोजन

- दिसंबर, 1853 को, नागपुर के राजा रघुजी तृतीय का निधन हो गया और उनके राज्य को ब्रिटिश शासन में मिला लिया गया, इसके बाद सतारा, झांसी और कई अन्य राज्यों का संयोजन हुआ।
- ये सभी शासक ब्रिटिश शासन के अनुचित कार्यों के खिलाफ एक साथ खड़े हुए और विरोध की लहर ने विद्रोह का रूप ले लिया और सन् 1857 प्रथम आंदोलन हुआ।

## 1857 का विद्रोह

- 1857 का विद्रोह एक अखिल भारतीय स्वरूप में प्रथम आंदोलन था।
- इसने मेरठ से लेकर कोल्हापुर तक एक विशाल क्षेत्र को प्रभावित किया जिसमें भारतीय समाज के सभी वर्ग और धर्म के लोग शामिल हुए।
- मेरठ और दिल्ली में विद्रोह की चिंगारी के एक महीने के बाद ही, यह भारत के दूर-दराज के क्षेत्रों में फैल गया और सागर-नर्मदा क्षेत्र तथा नागपुर इसके प्रभाव क्षेत्र में आ गए।
- बानपुर के मर्दन सिंह और शाहगढ़ के राजा बक्थबली ने विद्रोह में प्रमुख रूप से भाग लिया।
- अगस्त, 1857 तक जबलपुर और मंडला को छोड़कर नर्मदा के उत्तर में पूरे क्षेत्र पर स्वतंत्रता सेना का अधिकार हो गया।
- कई स्वाधीन शासक जिनके राज्य ब्रिटिश शासन के अधीन हो गए थे, उन्होंने विद्रोह में वीरता से युद्ध किया।
- रामगढ़ की रानी, झांसी की रानी, तात्या तोपे और नाना साहब इनमें से कुछ थे।
- 18 जून, 1858 में झांसी की रानी की मृत्यु के बाद तात्या टोपे ने अंग्रेजों के खिलाफ अपना छापामार युद्ध जारी रखा। दुर्भाग्यवश, वह विश्वासघात के शिकार हो गए और अप्रैल, 1859 में उन्हें फांसी दे दी गई।

## भारतीय स्वतंत्रता संग्राम

- 1857 के विद्रोह की चिंगारियां अंततः पूरे देश में स्वतंत्रता संग्राम की आग के रूप में फैल गईं।
- मध्य प्रदेश भी उन अनेक राज्यों में से एक था जो उस आग में जल रहे थे।
- मध्य प्रदेश के लोगों का पहला विद्रोह जून, 1857 में हुआ, जब नीमच में ब्रिटिश अधिकारियों के बंगलों में आग लगा दी गई थी।
- शीघ्र ही, मुरार (ग्वालियर) कैंट में भारतीय सैनिकों ने विद्रोह कर दिया और सभी संचार चैनलों को नष्ट कर दिया।

## झण्डा सत्याग्रह

सन् 1923 में जबलपुर में जब पुलिस कमिश्नर ने हमारे राष्ट्रीय ध्वज का अपमान किया, तब पूरे राज्य में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया और सरोजिनी नायडू तथा मौलाना आजाद ने जबलपुर के टाउन हॉल में झण्डा फहराया। 1923 में नागपुर और जबलपुर में झण्डा सत्याग्रह कई महीनों तक चला।

## जंगल सत्याग्रह

जबलपुर में 1930 के जंगल सत्याग्रह में सेठ गोविंद दास, माखनलाल चतुर्वेदी, पंडित रविशंकर शुक्ला, पंडित द्वारिका प्रसाद मिश्र और विष्णु दयाल भार्गव जैसे प्रमुख नेताओं ने भाग लिया। कांग्रेसियों ने सत्याग्रह को गांव-गांव और जंगलों की आदिवासी जनजातियों में फैलाया।

### चरण पादुका नरसंहार

मध्य प्रदेश का जलियांवाला बाग हत्याकांड, जहां पुलिस ने छतरपुर में स्वतंत्रता सेनानियों की शांतिपूर्ण बैठकों पर गोली चलाकर कई निर्दोष व्यक्तियों की हत्या कर दी। 14 जनवरी, 1930 को छतरपुर शहर से 50 किलोमीटर दूर चरण पादुका नामक स्थान पर रियासती शासन के विरोध में एक बड़ी बैठक आयोजित की गई थी। ब्रिटिश सेना ने बैठक को तितर-बितर कर दिया और कई लोगों की हत्या कर दी।

### व्यक्तिगत सत्याग्रह

गांधीजी ने जबलपुर में राष्ट्रव्यापी व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू किया और श्री विनोबा भावे पहले व्यक्तिगत सत्याग्रही बने।

### उस समय की कुछ सल्तनत

#### ग्वालियर सल्तनत

भारतीय राज्य ग्वालियर पर सिंधिया राजवंश का शासन था। सिंधिया भारत में एक मराठा वंश है। राज्य को अपना नाम ग्वालियर के पुराने शहर से मिला और इसकी स्थापना 18वीं शताब्दी की शुरुआत में मराठा संघ के भाग के रूप में राणोजी सिंधिया ने की। महादजी सिंधिया (1768 - 1794) के शासनकाल में ग्वालियर राज्य उत्तरी भारत में एक प्रमुख शक्ति बन गया। आंग्ल मराठा ग्वालियर राज्य को अंग्रेजों के शासन के अधीन लाए।

सन् 1936 में, इसे केंद्रीय भारतीय एजेंसी से अलग कर दिया गया और इसे प्रत्यक्ष रूप से भारत के गवर्नर जनरल के अधीन रखा गया। सन् 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद शासकों को भारत सरकार में शामिल कर लिया गया था और इस प्रकार ग्वालियर नए भारतीय राज्य मध्य प्रदेश का हिस्सा बन गया।

#### भोपाल सल्तनत

भोपाल 18वीं शताब्दी के भारत का एक स्वतंत्र राज्य था।

यह सन् 1818 से 1947 तक भारत की एक रियासत और सन् 1949 से 1956 तक एक भारतीय राज्य था।

आजादी के बाद इसकी राजधानी भोपाल थी।

भोपाल अंगीकार पत्र (instrument of accession) पर हस्ताक्षर करने वाला अंतिम राज्य था। 1957 के राज्य पुनर्गठन अधिनियम के अनुसार भोपाल राज्य को मध्य प्रदेश में एकीकृत किया गया था।

ईस्ट इंडिया कंपनी और भोपाल के नवाब नज़र मोहम्मद के बीच आंग्ल - भोपाल संधि के फलस्वरूप, भोपाल मार्च, 1818 में ब्रिटिश भारत में एक रियासत बन गया।

### रीवा सल्तनत

रीवा 1812 में एक रियासत बन गया और सन् 1947 में भारत की आजादी तक यह एक रियासत बना रहा।

रीवा के शासक वाघेला कुल के सोलंकी या चालुक्य वंश के राजपूत थे।

### मध्य प्रदेश: स्वतंत्रता के बाद

सन् 1950 में, मध्य भारत पूर्व ब्रिटिश मध्य प्रांतों से बनाया गया था। नए राज्यों मध्य प्रदेश, विंध्य प्रदेश और भोपाल का गठन केंद्रीय भारतीय एजेंसी से किया गया था।

सन् 1956 में, मध्य भारत, विंध्य प्रदेश और भोपाल राज्यों का मध्य प्रदेश में विलय कर दिया गया और भोपाल इसकी राजधानी बन गई।

नवंबर, 2000 में, नया राज्य बनाने के लिए मध्य प्रदेश पुनर्गठन अधिनियम के अनुरूप राज्य के दक्षिण-पूर्वी हिस्से को विभाजित कर दिया गया और रायपुर राजधानी के साथ छत्तीसगढ़ 26वां राज्य बना।

BYJU'S